अध्याय 3

विभाजनों की गम्भीरता

कुरिन्थ में मसीही लोगों के मध्य विभाजन के कारण ज्ञान में गलत विश्वास होने की गवाही मिली जैसा कि संसार के द्वारा इसे परिभाषित किया गया है। कुरिन्थ में स्थापित मूर्ख प्रकार का ज्ञान परमेश्वर के ज्ञान के सामने विरोध के रुप में खड़ा था परन्तु कलीसिया में हो रहे कोलाहल ने समस्याओं की ओर इस प्रकार इशारा किया कि वे सांसारिक ज्ञान के साथ किसी मूर्खता से अधिक गहरी होती चली गई। गड़बड़ी फैलाने वाली जो आत्मा उन्हें चला रही थी वह कामुक, सांसारिक मूल्यों से उत्पन्न थी। इनमें से कुछ मसीही लोग मसीह के आत्मा को अपने हृदयों में राज करने की स्वीकृति देने में असफल हो गए थे। पसन्दीदा शिक्षकों के आधार पर, निचले स्तर की ईर्ष्या को स्थान देना, प्रतिष्ठा के लिए प्रतिस्पर्धा और दलों का चुनाव करना उत्पन्न हो गया।

मसीही जीवन के प्रति इस प्रकार की अपरिपक्व पहुँच ने सुसमाचार की प्रतिज्ञा और माँगों से ध्यान और ताकत को दूसरी ओर मोड़ दिया। मसीह के क्रूस में प्रमाण के रुप में परमेश्वर के अनुग्रह पर प्रकाश के लिए दलों के बीच विश्वासयोग्यता के लिए कोई स्थान न रहा। इसके स्थान पर नैतिक शुद्धता के प्रयोग के साथ इसने समझौता किया और भाईचारे के प्रेम को अनदेखा करने की ओर अगुवाई दी।

विभाजन: शरीर का एक फल (3:1-9)

**1हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से,
परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। 2मैं ने तुम्हें दूध
पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक
भी नहीं खा सकते हो, 3क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में
डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर
नहीं चलते? 4क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा, "मैं
अपुल्लोस का हूँ," तो क्या तुम मनुष्य नहीं? 5अपुल्लोस क्या है? और पौलुस
क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु
ने दिया। 6मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। 7इसलिये
न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर ही सब कुछ है जो
बढ़ानेवाला है। 8लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक
व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मज़दूरी पाएगा। 9क्योंकि हम**

परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

आयत 1. कुरिन्थ के मसीही लोगों ने आत्मिक वरदानों को बड़ा महत्व देते हुए एक असाधारण प्रदर्शन प्रस्तुत किया (12:7-10) परन्तु आत्मिक सन्देश को कोई महत्व नहीं दिया। पौलुस **उनसे आत्मिक लोगों के समान बात नहीं कर सका**। प्रेरित को **शारीरिक लोगों** के साथ स्वयं को रखना पड़ा जो कि **मसीह में बालक** थे। फिर भी उन लोगों के सब प्रकार के विभाजन, उनके संघर्ष और उनके बालक के समान तरीकों के बाद भी ये लोग जिनसे पौलुस बात कर रहा था, "मसीह में" थे। प्रेरित ने अब उन्हें आगे किसी प्रकार से छोड़ा नहीं जैसा कि शायद मसीह उन्हें छोड़ चुका होता। विरोधों के बाद भी - उनकी दिखावे के साथ मूर्खता और सांसारिक ज्ञान के बाद भी ये कुरिन्थ के लोग किसी भाव में "आत्मिक मनुष्य" थे। पवित्र-आत्मा उन्हें निरन्तर निर्देश देता रहा और ताकत देता रहा; परन्तु आत्मा पाने के बाद भी वे शरीर को पुनः काम करने की स्वीकृति देते रहे। शारीरिक महत्व उनके मन को इस प्रकार बन्दी बना चुका था कि पौलुस अब उनसे आत्मिक लोगों के रुप में बात नहीं कर पा रहा था।

एक असामान्य भाषा जो कि वे बोलते थे अथवा आत्मा की चुभन के एक आन्तरिक भाव के द्वारा प्रेरित ने "आत्मिक लोगों" में कोई पहचान नहीं पायी। अगर पौलुस चाहता है कि कुरिन्थ को लोगों को वह आत्मिक कहे तो इसके लिए यह आवश्यक है कि वे परिपक्व बनें। कूतर्की लोगों के द्वारा परिभाषित ज्ञान के द्वारा आकर्षित न होना ही परिपक्वता का चिन्ह था। जिस स्तर तक वे क्रूस के साथ लिपट जाएँ और प्रभु के रुप में मसीह की सेवा कर ले, उसी स्तर में उन्हें अपनी बालक जैसी बातों को एक तरफ़ करना होगा। एक पक्ष को पसन्द करने का जोशीला सहयोग, परिपक्वता से अलग कर दिया गया जिसे पौलुस अपने पाठकों के मध्य देखना चाहता था।

आयत 2. पौलुस स्वयं के लिए स्त्रीलिंग अलंकार का प्रयोग करने में कोई समस्या का अनुभव नहीं कर रहा था। थिस्सलुनीकियों के लोगों के लिए वह एक कोमल माता के समान था (1 थिस्स. 2:7; KJV); कुरिन्थ के लोगों के लिए वह विश्वासियों को **दूध पिलाने वाली** माता के समान था। सम्भव है कि कुरिन्थ में पौलुस के अठारह महीने के ठहराव के अन्त से लेकर तीन वर्ष बीत चुके थे (प्रेरितों 18:11)। वहाँ अपना समय बिताते हुए उसने मसीही सिद्धान्त की नींव डाली। उसने कुरिन्थ के लोगों का परिचय विश्वास से करवाया: "यीशु मसीह और क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह" से करवाया (1 कुरिं. 2:2), "मरे हुए कामों से मन फिराने," "मरे हुओं के जी उठने," और "अन्तिम" (देखें इब्रा. 6:1, 2) से करवाया। अपनी आत्मिक यात्रा के आरम्भ में वे अपने विश्वास में जवान थे, मसीह में बालक थे। उसने उन्हें सुसमाचार का मूलभूत दूध पिलाया। उनके पास वृद्धि का समय था। वास्तव में उन्हें मसीह में बढ़ जाना चाहिए था परन्तु वे लोग उन बातों की ओर मुड़ गए जो कि कलीसिया की एकता को नीचा करती है।

पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को यह सलाह दी कि वे लोग सुसमाचार की

आधारभूत सच्चाइयों को लागू करने की ओर झुकाव पाएँ। मसीह के सिद्धान्त प्रश्न उत्पन्न करते हैं और वे ऐसे हैं जो कि मानव को उसके मानवीय ज्ञान की सीमाओं से आगे बढ़ाते हैं। नैतिक बातों को लागू करने के लिए आत्म-परिक्षण और पश्चात्ताप विश्वासियों को बुलाहट देते हैं। कुरिन्थ के मसीही लोगों ने विश्वास का **अन्न** पचाने के लिए स्वयं को चुनौती नहीं दी थी। उनके सांसारिक तरीकों ने उन्हें मसीह में बढ़ने और परिपक्क होने के योग्य बनने नहीं दिया। जब पौलुस ने अपने पाठकों से यह कहा, **अब भी तुम योग्य नहीं हो**, तब वह उन्हें चुनौती दे रहा था कि वे अपनी बालक जैसी हरकतों को एक तरफ़ कर दें। उसने उनसे ज़ोर देकर आग्रह किया कि वे विश्वास की अधिक परिपक्क समझ के लिए और इसके परिणामस्वरुप पवित्र जीवन के लिए स्वयं को दें।

आयत 3. पौलुस ने यह दोष लगाया कि कुरिन्थ के लोग आत्मा (*न्युमटिकोई*, 3:1) के द्वारा चलाए जाने वाले लोगों के समान व्यवहार करने के स्थान पर इस प्रकार से व्यवहार कर रहे हैं जैसे कि वे शरीर (*सर्कीकोई*, 3:3) के चलाए चल रहे हों। जो सदस्य गूढ़ ज्ञान और बुद्धि के द्वारा आकर्षित कर लिए गए थे वे इस प्रकार के दोष से अप्रसन्न हुए। वे स्वयं को आत्मिक समझते थे। वे यह दावा करते थे कि वे परिपक्क हैं। फिर भी प्रेरित ने यह प्रमाण प्रस्तुत किया कि वे **अब भी शारीरिक हैं**। उनके बीच में परिपक्कता के चिन्ह जिनका दावा पौलुस ने किया वे चिन्ह **डाह और झगड़ा** थे।

पौलुस ने नए नियम के किसी अन्य लेखक की तुलना में, प्रत्येक मानव हृदय में छिपी पापमय अभिलाषाओं के प्रतीक के रुप में "शरीर" शब्द (σάρξ, *सार्क्स)* का प्रयोग अधिक किया। इस प्रकार की अभिलाषाएँ सम्भव है कि स्वयं को सूक्ष्म रुप में या प्रत्यक्ष रुप से प्रकट करें। जे. ए. मोट्यर ने लिखा, "'शरीर,' पापमय होने का एक गतिशील सिद्धान्त है।"[1] जब तक वे बेकार की बातों में लगे रहेंगे, प्रतिस्पर्धा करते रहेंगे और इस बात पर तर्क करते रहेंगे कि उनके बीच में किसने ज्ञान की खोज की, तब तक पौलुस के लिए कठिन है कि उन्हें वह प्रभु की निकटता तक ले जा सके। जिस प्रकार से वे स्वयं को आत्मिक दिखाने के स्थान पर शारीरिक रुप में दिखा रहे थे, इससे पौलुस आश्चर्यचकित था। आरम्भ में वे शरीर से थे। यह समझा जा सकता है कि उस समय वे मसीह में नए जन्मे हुए बालक थे। अब अनेक वर्षों के पश्चात पौलुस उनसे यह अपेक्षा नहीं रख रहा था कि उनमें अधिक परिपक्कता हो। उसने उनसे कहा कि वे एक कदम पीछे हटकर अपनी स्थिति को देखें और स्वयं का न्याय करें। **क्या तुम मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?** उसने उनसे पूछा।

आयत 4. पौलुस ने कुरिन्थ के मसीही लोगों का सामना तीन तथ्यों से किया: अगर बुद्धि और शिक्षा, परमेश्वर के प्रकाशन में जड़ पकड़े हुए न हो तो उसकी खोज का कोई मूल्य नहीं है (2:6)। जब तक लोग इस प्रकार के दावे करते हैं जैसे कि **"मैं पौलुस का हूँ"** और **"मैं अपुल्लोस का हूँ,"** तब तक कुरिन्थ के लोग मात्र आत्मिक बालक ही थे। पूर्व में प्रेरित ने चार नाम दिए: "पौलुस," "अपुल्लोस," "कैफ़ा," और "मसीह" (1:12 पर टिप्पणी देखें)। यहाँ सूची में दो

नाम कम होने से यह ज्ञात होता है कि कुरिन्थ की कलीसिया में विभाजन, पौलुस अथवा अपुल्लोस पर केन्द्रित हो गया था। पौलुस वक्तव्य में अनाड़ी था (2 कुरिं. 11:6)। अपुल्लोस विद्वान पुरुष था और अच्छा वक्ता था तथा पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था (प्रेरितों 18:24)। जैसे हम मसीह के विषय में कहेंगे कि वह कभी कुरिन्थ नहीं गया उसी प्रकार से कैफ़ा के कुरिन्थ में जाने के विचार को माना नहीं जा सकता। कैफ़ा फिर से 3:22 में दिखाई देता है, परन्तु वह किसी समूह के प्रतिनिधि के रुप में दिखाई नहीं देता।[2]

अंतिम प्रश्न, **क्या तुम मनुष्य की रीति पर नहीं चलते**, यूनानी में अप्रकट वाक्य है। पौलुस ऊपरी तौर से यह कहना चाह रहा था कि मानवीय शिक्षकों के साथ अपनी निष्ठा में बने रहने के द्वारा वे संसार के लोगों के समान व्यवहार कर रहे थे मानो उन्होंने मसीह का प्रभाव नहीं पाया हो। उनका व्यवहार इस बात की ओर संकेत कर रहा था कि वे अब आत्मिक नहीं रहे परन्तु जैसे पूरी तरह से शरीर के कैदी बन गए हों। वे मसीह के शरीर में आवश्यक एकता के लिए कोई प्रशंसा प्रकट नहीं कर रहे थे (1:10)।

आयत 5. यूनानी पुल्लिंग प्रश्नवाचक सर्वनाम (τίς, *टिस,* "कौन?") को सामान्य रुप से नपुंसक लिंग (τί, *टी,* "क्या?") के साथ अदला-बदली किया जाता है। सम्भव है कि पाठक पौलुस से यह अपेक्षा रखें कि वह "**अपुल्लोस** कौन है" और पौलुस कौन है, कहते हुए पुल्लिंग का प्रयोग करे। इसके स्थान पर उसने नपुंसक लिंग का प्रयोग किया: **अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है?** अगर नपुंसक सर्वनामों का प्रयोग करने के द्वारा प्रेरित कुछ बताना चाहता तो सम्भव है कि वह इन दो शिक्षकों के संपूर्ण काम की ओर ध्यान आकर्षित करने की इच्छा रखता।[3] निश्चित बात यह है कि कुरिन्थ के लोग उन लोगों पर बहुत अधिक बल दे रहे थे जिन्होंने शहर में उस एकमात्र के लिए प्रचार किया था जिसका प्रचार किया जाता है। गोर्डन डी. फ़ी ने यह अवलोकन किया है, "कलीसिया और इसकी अगुवाई के स्वभाव में उनका उग्र रुप से गलत मार्ग की ओर ले जाने वाला ज्ञान समस्या का कारण है, और इस विषय में विशेष रुप से शिक्षकों की भूमिका ज़िम्मेदार है।"[4]

पौलुस ने यह बल दिया कि शिक्षक उन **सेवकों** से न तो कम हैं और न अधिक हैं **जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया**। सच का प्रचार करने के द्वारा मसीह और उसके लोगों की सेवकाई एक आदर की बात है; परन्तु जब मसीही लोग शिक्षकों को ऊँचे मंच पर रख देते हैं और उनके चारों ओर एक गुट तैयार कर देते हैं तब वे उन लोगों का अनादर करते हैं जिनका उद्देश्य प्रभु के सेवक बनने का था। पौलुस और अपुल्लोस जैसे महान शिक्षकों के विषय में भी यह सच था। आज के समय में प्रचारकों के विषय में देखा जा सकता है कि वे बहुत कम ही अपने प्रचार के अनुसार कर पाते हैं!

परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में पौलसु एक "बँधुआ कैदी" (δοῦλος, *डुलौस)* था; परन्तु कलीसियाओं के साथ सम्बन्ध में वह एक "सेवक" (διάκονος, *डाइकोनोस)* था। उसने यह स्पष्ट कर दिया वह अथवा अपुल्लोस ने स्वयं को

किसी शिक्षक के रुप में आगे नहीं रखा है जिनके आगे सब जन झुकें। परमेश्वर ने **प्रत्येक जन को** (पौलुस को अथवा अपुल्लोस को) अवसर दिया जिससे कि वे स्वयं के तरीके से उसकी सेवा करें। दोनों में से किसी ने भी किसी समूह से किसी प्रकार की निष्ठा की इच्छा नहीं रखी। जिस प्रकार पौलुस और अपुल्लोस साथी थे और मसीह के अन्तर्गत एक थे इसी प्रकार कुरिन्थ के लोगों को चाहिए कि वे भी एक बनें। प्रतिष्ठा के स्थान पर सेवा, मसीही परिपक्वता का चिन्ह थी।

आयत 6. कलीसिया में शिक्षकों की भूमिका स्पष्ट करने के लिए पौलुस ने कृषि से एक उदाहरण प्रस्तुत किया। वह पौलुस था जिसने आरम्भ में कुरिन्थ में मसीह का प्रचार किया। अपुल्लोस ने अँकुरित हुए विश्वास को सींचा। पौलुस ने कहा, **मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा**। पौलुस और अपुल्लोस के काम एक-दूसरे के पूरक हैं। पौलुस ने अपुल्लोस को उसके किए हुए काम के अनुसार उचित श्रेय दिया। अपने शब्दों में कहीं पर भी बराबरी करने का कोई भी छोटा सा बिन्दू भी इन दो शिक्षकों के बीच देखने को नहीं मिलता। जब आत्माएँ बचाई गई तब **परमेश्वर ने बढ़ोतरी दी**। परमेश्वर के सेवकों के चारों ओर कुरिन्थ के लोगों के द्वारा की गई गुटबंदी मूर्खता थी। पौलुस और अपुल्लोस मसीह की महिमा के लिए सब प्रकार के मानवी स्तरों को कुछ नहीं समझते हुए, पृष्ठभूमि में मन्द पड़ जाने के लिए उत्सुक थे (फ़िलि. 3:8, 9)।

आयत 7. पौलुस और अपुल्लोस इस भूमि पर मज़दूर थे परन्तु खेत स्वयं कुरिन्थ की कलीसिया था। सब शिक्षकों ने मिट्टी तैयार की, बीज बोया, पानी दिया और उसे उपजाया। बीज के अँकुरित होने और मिट्टी में से ज़ोर लगाकर एक हरी पत्ती के बाहर आने के आश्चर्य की तुलना में ये सब विरोधी प्रयास फ़ीके कर दिए गए। सेवक ने इसकी छाया में कदम रखा; **यह परमेश्वर था जिसने बढ़ाया**। कलीसिया एक ऐसा समूह था जिसे क्रूस के द्वारा आकार दिया गया (2:2) क्योंकि इसके अनुग्रह के सन्देश ने स्त्री और पुरुषों को उद्धार की ओर अगुवाई दी।

आयत 8. एक अर्थ में पौलुस, अपुल्लोस और वचन के प्रत्येक विश्वासयोग्य शिक्षक का मन, हृदय और प्रयास **एक हैं**। NRSV इस विषय में सही अर्थ रखती है: "वह जो कि बोता है और वह जो कि सींचता है, उन दोनों का एक सामान्य उद्देश्य है।" उसी समय प्रत्येक शिक्षक एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी योग्यताएँ उसके स्वयं में अद्भुत हैं। प्रत्येक जन कलीसिया के विकास में स्वयं के तरीके से योगदान देते हैं। अन्त में परमेश्वर सब मानव हृदयों को देखेगा। **हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मज़दूरी पाएगा।** कुरिन्थ में मसीही लोगों ने पौलुस, अपुल्लोस और सच सिखाने वाले अन्य लोगों के प्रयासों की प्रशंसा की; परन्तु बहुमत के अनुसार तुलना करने का कार्य अशोभनीय था। उनके लिए व्यक्तिगत चुनाव के अनुसार मसीह की देह की एकता में विभाजन करना अक्षम्य था।

ऐसी अपेक्षा नहीं की गई कि पौलुस स्वयं के लिए, अपुल्लोस के लिए और अन्य जन के अनुमान के द्वारा कहेगा कि प्रत्येक जन "अपनी मज़दूरी पाएगा" (देखें 3:14)। यहाँ उसने किसी किराए के मज़दूर को दी जाने वाली "मज़दूरी" के

लिए यूनानी शब्द का प्रयोग किया (μισθός, *मिस्थोस*, वह शब्द जिसका अनुवाद "मज़दूरी" [NASB] अथवा "मज़दूरी" [NIV] के रुप में रोमियो 4:4 में किया गया)। किसी प्रकार कोई सेवा करने के भुगतान के रुप में मज़दूरी दी जाती है और यही प्रेरित ऐसा बनाए रखता है कि परमेश्वर जब किसी अधर्मी को बचाता है तो उसकी मज़दूरी के, ऐसे ही टकड़े नहीं कर देता। उसने स्वयं को एक ऐसे निक्कमे दास के रुप में देखा जो कि स्वयं को सुसमाचार के प्रचार से रोक नहीं सका (1 कुरिं. 4:1; 9:16; 1 तिमु. 1:15; देखें लूका 17:10)। विश्वासियों का विश्वास यह है कि "यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया" (रोम. 4:3; NIV)। जबकि पौलुस का दृढ़ सन्देश मानव गुणों की अनुपस्थिति में परमेश्वर के अनुग्रह का नमूना था, तब भी प्रेरित मानव के उत्तरदायित्व पर बल देने के विषय में लज्जित नहीं होता। पौलुस के मन में जो मज़दूरी थी वह उन सेवकों के अनुसार थी जिन्हें प्रभु ने एक दिन में मात्र एक घंटा काम करने पर भी दी थी (मत्ती 20:8)। दोषमुक्ति, गुणों के अनुसार भुगतान नहीं है परन्तु यह व्यवहार में व्यक्त किए जाने वाले विश्वास का परिणाम है (रोम. 2:13)।

आयत 9. सम्बन्धकारक शब्द "परमेश्वर के" यूनानी वाक्य में प्रथम बार 3:9 में आता है। अक्षरशः यह कहता है, "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं।" यहाँ परमेश्वर पर एक निश्चित बल दिया गया है। पौलुस ने यह स्पष्ट किया है कि सब प्रकार के मसीही प्रयास का केन्द्र परमेश्वर है। पौलुस और अपुल्लोस, अपनी क्षमता में मात्र सेवक थे फिर भी, कम-से-कम वर्तमान समानता के अनुसार वे **परमेश्वर के सहकर्मी** थे। मसीह का सेवक परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के द्वारा स्वयं के लिए महत्व आकर्षित कर लेता है। फिर स्वयं को बड़ा दिखाने अथवा स्वयं की महिमा की खोज करने के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। शरीर स्वाभाविक रुप से एक है। कुरिन्थ के लोग **परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना** थे। प्रेरित, पूर्व में ही कृषि के अलंकार से निर्माण के अलंकार (3:10-17) की ओर अपनी तुलना के कार्य पर बल दे रहा था। अधिक विवरण के लिए पाठक, पौलुस के द्वारा प्रयोग में लिए गए अलंकार, जैसे कि "सहकर्मी," "खेती," "निर्माण" पर अधिक बल न दें। वह परमेश्वर के सेवकों के विशिष्ट कार्यों के विषय में अधिक बताने के स्थान पर किसी भी जन के लिए परमेश्वर के द्वारा किए गए कार्यों के विषय में बताना चाह रहा था। शरीर की एकता के विषय में जो कुछ उसने कहा उसका महत्व प्रकट है।

परमेश्वर की रचना; परमेश्वर का मन्दिर (3:10-17)

कुरिन्थ के लोगों के सम्मुख, अपुल्लोस और स्वयं के द्वारा किए गए कामों को याद दिलाते हुए प्रेरित कुशलता के साथ मसीही लोगों के द्वारा अनुभव किए गए अनुग्रह और इसके परिणामस्वरुप, शरीर की परिपक्वता और एकता के लिए प्रत्येक विश्वासी की ज़िम्मेदारी के चारों ओर घूमता है। इस प्रक्रिया में पौलुस ने अपने पाठ का अनुप्रयोग, शिक्षकों से सम्पूर्ण कलीसिया की ओर स्थानान्तरित कर दिया। कुरिन्थ में प्रत्येक मसीही व्यक्ति के लिए यह आवश्यक था कि वह

कलीसिया के निर्माण में इसके आकार की सुगमता में स्वयं के योगदान की जाँच करे। अन्त में प्रेरित चाहता था कि वे यह बात जान लें कि किसी इमारत से कलीसिया की तुलना करना पर्याप्त नहीं है। मसीह की कलीसिया, वास्तव में परमेश्वर का मन्दिर है। परमेश्वर इसके गलियारे में रहता है।

"चौकस रहो कि कैसा रद्दा रखते हो" (3:10-15)

[10]परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। [11]क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। [12]यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, [13]तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। [14]जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मज़दूरी पाएगा। [15]यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते।

आयत 10. प्रेरित ने कृषि और वास्तुकला के अलंकारों का प्रयोग किया जिससे की मसीही लोगों को समझने में आसानी रहे कि पौलुस और अपुल्लोस ने मसीह और उसकी कलीसिया की सेवा की है। दोनों में से कोई भी एक जन स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ नहीं था। मसीही लोग जब यह दावा करते हैं कि उनमें से कोई एक जन, दूसरे से अधिक विश्वासयोग्य है तो इसका अर्थ प्रभु का अनादर करना था। कलीसिया वह खेत है जहाँ इन सेवकों ने परिश्रम किया।

भिन्न रुप से देखने पर, कलीसिया परमेश्वर की रचना थी। "रचना" नामक अलंकार के प्रयोग ने पौलुस को स्वीकृति दी जिससे कि वह अपुल्लोस और उसके स्वयं के द्वारा किए गए कामों के कुछ निश्चित पहलुओं की ओर ध्यान केन्द्रित कर सके, जो कि उसके खेत के अलंकार में देखने को नहीं मिलते।

परमेश्वर के अनुग्रह से पौलुस ने कुरिन्थ में कलीसिया की **नींव डाली**। प्रेरित ने स्वयं को ἀρχιτέκτων (*अर्खिटेकटोन*, "एक मुख्य राजमिस्त्री") की पदवी दी।[5] एक निर्माता के रुप में आलंकारिक रुप से पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया की नींव रखी; फिर अपुल्लोस ने उस नींव पर रद्दा रखा। उसने अच्छी प्रकार से निर्माण किया परन्तु अन्य लोगों से अपेक्षा की गई कि वे भी योगदान करें। कुछ लोग बुद्धिमानी के साथ निर्माण करते हैं; अन्य जन लापरवाही के साथ अथवा जर्जर सामग्री का प्रयोग करते हुए निर्माण करते हैं। कुछ क्षणों के लिए प्रेरित यह चाहता था कि स्वयं से और अपुल्लोस से परे यह विचार करें कि अन्य लोग किस प्रकार निर्माण कर रहे हैं। पौलुस ने जो नींव डाली उसके विषय में एकवचन विशेषण और वर्तमान काल का प्रयोग करते हुए लिखा, **दूसरा उस पर रद्दा रखता है**।

ऊपरी तौर पर पौलुस के मन में दूसरा निर्माता अपुल्लोस नहीं था। अपुल्लोस उस समय शहर (1 कुरिं.16:12) में नहीं था। ऐसा लग रहा था कि पौलुस किसी बेनाम शिक्षक के विषय में संकेत कर रहा था जो कि कुरिन्थ में था और अपुल्लोस के नाम का प्रयोग करते हुए विभाजन को प्रोत्साहित कर रहा था। उस व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने सचेत किया कि **हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह कैसा रद्दा रखता है**। कोई व्यक्ति जब स्वयं को शिक्षक समझने लगता है तो सम्भव है कि वह स्वयं के लिए और कलीसिया के लिए एक बड़ी हानि का कारण रहे। यहाँ याकूब के समान पौलुस ने सचेत किया कि जो कोई मसीही शिक्षक बनना चाहते हैं वे उस ज़िम्मेदारी का ध्यान रखें जिसे वे उठाते हैं (देखें याकूब 3:1)।

आयत 11. जो नींव पौलुस ने कुरिन्थ में रखी वह "यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाया हुआ मसीह" (2:2) था। शिक्षकों के प्रति निष्ठा के आधार पर विभाजन करने वाले एक ऊच्च आकार के निर्माण का प्रयास कोई ऐसी अन्य प्रकार की नींव कहलाएगी जो कि पौलुस के द्वारा डाली गई नींव से अलग है। जिस विभाजन का अनुभव कुरिन्थ के लोग कर रहे थे उसने मूल उपसंरचना को नकारने का संकेत दिया। कोई भी **मनुष्य**, जो जीवन, उद्धार और आशा की खोज करने की इच्छा रखता है **उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता**। मानव बुद्धि पर निर्भर होने का अर्थ है कि मसीह की देह को बाँटना और पौलुस के द्वारा डाली गई नींव से इन्कार करना; सार के रुप में यह मसीह को नकारना था। प्रतियोगी नींवें उन लोगों के लिए प्रश्न से बाहर हो जाती हैं जो मसीह की कलीसिया बनने की इच्छा रखते हैं।

आयत 12. पौलुस ने मसीह में कुरिन्थ पर कलीसिया की नींव रखी; अर्थात उसने उन्हें मसीही सिद्धान्त की मूल बातें सिखाई। उन्होंने उस मसीहा के विषय में सीखा जिसे दुःख उठाना था और जिसका वायदा परमेश्वर ने दिया था, साथ ही उन्हें यह भी सिखाया गया कि उस वायदे की पूर्ति यीशु था (लूका 24:46, 47; प्रेरितों 17:3)। इस मूल शिक्षा के अतिरिक्त पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि मसीही लोग वृद्धि करें। पौलुस ने एक ऐसे बालक का उदाहरण देते हुए जिसको अन्न से पोषण की आवश्यकता होती है (1 कुरिं. 3:2), गहरी जड़ के पौधे का उदाहरण देते हुए जिसको जल की आवश्यकता होती है और ऐसी इमारत का उदाहरण देते हुए जिसको एक मज़बूत नींव की आवश्यकता होती है, विश्वास और विश्वासयोग्यता को बढ़ाने के विषय में बात की। पौलुस आत्म - विश्वास से यह कह सकता था कि कुरिन्थ में कलीसिया के लिए डाली गई नींव सही प्रकार से डाली गई है परन्तु वह इतना आत्म-विश्वासी नहीं था कि उस नींव पर रद्दे की प्रक्रिया अच्छी प्रकार से चल रही है। कुरिन्थ में शिक्षा दिया जाना और उसका प्रयोग करना, दो अलग-अलग प्रकार की निर्माण सामग्री के अनुसार थी। कुछ लोग कुशल थे और परमेश्वर की महिमा करने वाले थे परन्तु अन्य जन ने किसी भी प्रकार की भलाई का वायदा नहीं किया।

प्रेरित की निर्माण की सामग्री के उदाहरण पर अधिक आगे न चले जाएं।

पत्थर और लकड़ी के समान सोना और चाँदी को, एक मज़बूत आकार का निर्माण करने के लिए प्रायोगिक रुप से नहीं लिया जा सकता। पौलुस का उदाहरण किसी इमारत के आकार की सजावट के स्थान पर उसकी सुन्दरता और अनुग्रह के लिए अधिक निवेदन करता है। एक वास्तुकार किसी इमारत को **सोना**, **चाँदी** और **बहुमूल्य पत्थर** से सजाने को तब तक उपयोगी नहीं समझता जब तक वह सन्तुष्ट न हो जाए कि उसका आकार मज़बूत है। पौलुस ने संकेत किया कि जो रद्दा मसीह की नींव पर डाला जाता है वह मनुष्य के द्वारा प्रस्तावित अति मूल्यवान वस्तुओं से अधिक मूल्यवान है। परमेश्वर की महिमा के लिए निर्माण करने का अर्थ है कि "सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थर" के साथ निर्माण करना। मसीह के स्थान पर पौलुस अथवा अपुल्लोस पर निष्ठा का निर्माण करने का अर्थ है कि विघटन करने वाली मानवीय बुद्धि पर चलना और **काठ**, **घास** [या] **फूस** की झोंपड़ी खड़ी करना जो कि सृष्टि के प्रभु के लिए मूल्यहीन है। मसीह ने अपनी कलीसिया का निर्माण आत्मिक वस्तुओं से किया है जो कि उन सब वस्तुओं का सामना कर सकती है जिसे संसार इसके विरोध में लाता है। जब लोग अपनी इच्छा के अनुसार कलीसिया को विस्तृत करते हैं तो, पौलुस ने यह घोषणा की कि, परिणाम के रुप में उसके आकार को टक्कर से गिराया जा सकता है अथवा जलाया जा सकता है। प्रेरित का विषय सम्पूर्ण में कलीसिया है, न कि कलीसिया के अन्तर्गत कोई विशेष सदस्य। कोई विशेष सदस्य स्वयं की धार्मिकता से उद्धार पाए हुए नहीं हैं। सब को परमेश्वर का अनुग्रह की आवश्यकता है। सब में "काठ," "घास," अथवा "फूस" की मात्रा है।

निसन्देह, पौलुस जब उसके द्वारा रखी गई नींव पर निर्माण करने के विषय में सचेत रहने पर बल दे रहा था तब वह कलीसिया अर्थात परमेश्वर के लोगों के समुदाय के विषय में बात कर रहा था। कुरिन्थ की कलीसिया के विषय में जो कुछ उसने कहा उसे समान प्रभाव के साथ प्रत्येक स्थान में विश्वासी मन्डलियों के विषय में अथवा विश्वव्यापी कलीसिया के विषय में कहा जा सकता है। मसीह में अपने आरम्भिक परिवर्तन के बाद मसीही व्यक्ति जब ध्यान के साथ निर्माण का कार्य करता है तो यह प्रशंसनीय है परन्तु इस सन्दर्भ में पौलुस लोगों के उस तरीके के बारे में नहीं कह रहा जिसके अन्तर्गत वे व्यक्तिगत विश्वास के निर्माण में आगे बढ़ते हैं।

आयत 13. आयत 3:12 में, पौलुस ने यह कहते हुए शर्त के साथ एक वाक्य कहा, "यदि कोई ... रद्दा रखे।" कुछ सम्भावनाओं को सूचीबद्ध करने के बाद वह अब उस विचार को पूरा करने के लिए तैयार है। सम्भव है कि जिस प्रकार का काम एक राजमित्री करता है वह तुरन्त दिखाई न दे; समय के अनुसार, फिर भी, **हर एक का काम प्रगट हो जाएगा**। यूनानी में इस प्रकार की शर्त के साथ के वाक्य में उसके पहले शब्द (वाक्यांश "यदि") को सही माना जाता है। कुरिन्थ में शिक्षकों ने, वास्तव में पौलुस द्वारा डाली गई नींव पर विभिन्न प्रकार से रद्दा डाला था। इन सबमें निश्चित बात यह है कि जिस प्रकार मनुष्य ने निर्माण किया है वह, ठीक समय में, **आग के साथ प्रगट किया जाएगा**। परमेश्वर के चुने हुए

दिन में, **प्रत्येक मनुष्य के काम** को परखा जाएगा कि **वह कैसा है**।

पौलुस की चेतावनी की विस्तृत रुप-रेखा स्पष्ट है परन्तु जब कोई व्यक्ति ध्यान से अपने शब्दों की परख करता है तब प्रेरित के तर्क अतिरिक्त सम्बन्धों की ओर लेकर जाते हैं। उदाहरण के लिए, "वह आग के साथ प्रगट होगा," वाक्यांश में सर्वनाम "वह" का पूर्ववर्ती भाग निश्चित करना कठिन है। क्या है जो आग के साथ प्रकट होगा? सम्भव है कि इसका अर्थ यह हो कि प्रत्येक मनुष्य का कार्य आग के साथ प्रकट किया जाएगा अथवा पौलुस यह कहना चाहता हो कि वह दिन आग के द्वारा प्रकट किया जाएगा। दोनों ही स्थिति में सन्दर्भ सटीक बैठता है; परन्तु, जैसा कि आग सामान्य रुप से न्याय के दिन के साथ सम्बन्ध रखती है (उदाहरण के लिए देखें, 2 थिस्स. 1:7; इब्रा. 10:27), प्रेरित सम्भावित रुप से यह कहना चाह रहा था कि संसार के न्याय के लिए प्रभु के पुनः आगमन का दिन आग के द्वारा पूर्ण किया जाएगा। आग अशुद्धता को साफ़ कर देती है और उचित महिमामय और मज़बूत को पीछे छोड़ देती है।

"वह दिन" जब "हर एक का काम प्रगट हो जाएगा," सम्भावित रुप से वह दिन है जब प्रभु पुनः आएगा परन्तु कुछ अन्य सम्भावनाएँ भी हैं। सम्भव है कि प्रेरित ऐसे समय का संकेत दे रहा हो जब कलीसिया सताव का सामना कर रही होगी। इस जीवन में परखे जाने के लिए "आग" भी एक अलंकार है (देखें 1 पतरस 1:7)। अधर्मी लोगों के द्वारा सताव, झूठे शिक्षकों के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली चुनौतियाँ अथवा मसीही लोगों में आपसी विवादों के द्वारा भी परखे जाने का समय आ सकता है। एक विश्वासी व्यक्ति जब मसीह की नींव पर अपनी इमारत का रद्दा रखता है तो इसके द्वारा इस जीवन में वे सताव को सहते हुए आगे बढ़ पाएँगे। सम्भव है पौलुस बच्चों की कहानी से कुछ अलग बात पर ज़ोर नहीं दे रहा था जिसमें तीन छोटे सुअर थे जिन्होंने भूसे का, लकड़ी का और ईंटों का प्रयोग करते हुए अपना घर बनाया।[6] कहानी में एक दिन एक भेड़िया प्रत्येक सुअर के दरवाज़े पर आया; परखे जाने के इस दिन ने उनके द्वारा निर्माण में ली गई सामग्री का मूल्य प्रकट हुआ। उसी प्रकार, मसीही लोगों के जीवन में, उनके परिवारों और विश्वासी मन्डलियों के जीवन में भी परखे जाने के दिन आते हैं। परखे जाने के दिनों में लोग, घर और कलीसियाएँ मज़बूती के साथ विश्वास और आत्मा के प्रकाशन के व्यवहार पर जिस स्तर तक उन्होंने निर्माण किया उस स्तर तक खड़ी रहेंगी। जो लोग परमेश्वर के प्रकाशन को जानते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं वे स्वयं को तैयार कर लेते हैं कि परखने वाले चाहे उन्हें किसी भी परिस्थिति में क्यों न फेंक दे, वे उसके लिए तैयार हैं।

आयत 14. पूर्व में पौलुस ने उन दोनों प्रकार के लोगों के लिए "पुरस्कार" अथवा "मज़दूरी" के विषय में लिखा जिन्होंने सुसमाचार का बीज बोया और जिन्होंने उस बीज को सींचा और उसकी देख-भाल (3:8) की। "पुरस्कार" शब्द का प्रयोग कोई गलत वाक्य नहीं है। जब आग प्रत्येक मनुष्य के काम की जाँच करती है कि वह कैसा है तब जिन मज़दूरों ने मज़बूती के साथ निर्माण किया वे **एक पुरस्कार प्राप्त** करेंगे। पौलुस के विचार में चिन्ता का एक अंश देखने को

मिलता है: उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के अनुसार है (इफ़ि. 2:8), परन्तु यह भी सच है कि परमेश्वर अपना अनुग्रह उन पापियों पर उँडेलता है जिनका प्रेम और विश्वास, सुसमाचार के प्रति आज्ञापालन के परिणामस्वरुप है।

यहाँ तक कि, सम्भव है कि एक अच्छे आकार का निर्माण करने के लिए काठ, घास या फूस का रुप कुछ समय के लिए छिपा दिया जाए। जब कलीसिया निर्माण की सामग्री के विषय में पौलुस की चेतावनियों पर ध्यान देती है तो यह निरन्तर आत्म-परीक्षण में भी जुड़ पाएगी। आत्म-परीक्षण की खोज करना कठिन नहीं है। क्या आराधना के लिए एकत्रित कलीसिया उन लोगों का पोषण करती है जो कि इसी उद्देश्य की इच्छा रखते हैं? क्या परमेश्वर के बारे में हमारी भावनाएँ सच्चाई के लिए हमारी चिन्ता और मसीही विश्वास के बारे में ज्ञान की हमारी अभिलाषा को महत्त्वपूर्ण मानती है? प्रेरिताई नींव पर ध्यान से निर्माण करने के लिए मसीही आवश्यकता, कुरिन्थियों के नाम लिखे गए पौलुस के पत्र के साथ समाप्त नहीं हुई।

आयत 15. जब न्याय की आग आएगी और हर एक का काम प्रकट हो जाएगा कि वह कैसा है तब वे शिक्षक जिन्होंने काठ, घास या फूस पर निर्माण किया है, अपने कामों को **जलता हुआ** देखेंगे। अनेक लोग जो कि परमेश्वर की महिमा के लिए जी सकते थे वे यह महसूस करेंगे कि वे अब तक संसार से ही जुड़े हुए थे। उनके शिक्षक आत्म-प्रत्यारोप में **नुकसान उठाएँगे**; वे यह जान जाएंगे कि खोए हुए लोगों को अनन्त जीवन तक लाने में प्रभु के साथ विश्वासयोग्य साथी बनने में वे असफल रहे।

पाठक यह याद रखें कि पौलुस एक अधूरा, सांसारिक उदाहरण काम में ले रहा था जिससे कि यीशु को प्रभु के रुप में स्वीकार कर चुके लोगों को यह बता सके कि आगे अन्य लोगों को सिखाने की ज़िम्मेदारी अब उनकी है। जेम्स डी. जी. डन ने जब यह लिखा, "उनके जीवन के गुण, यहाँ तक कि विश्वासी के भी, इतने होंगे कि एक छोटी संख्या के बाद भी वे बचा लिए गए," तब उसने पौलुस की आलंकारिक भाषा के एक बड़े भाग में से कुछ ही लिया।[7] "एक छोटी संख्या के द्वारा," उद्धार के विषय में सिखाने के स्थान पर प्रेरित इस बात पर बना रहा कि अनुग्रह, मनुष्य की गलतियों पर अनुमति प्रदान करता है। उचित रुप से सुनाम और गहरे विश्वास के साथ होने वाले लोग भी कभी-कभी गलत चुनाव करते हैं। अच्छी मंशा के बाद भी, सम्भव है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के लोगों का नुकसान कर दे। परमेश्वर, जो कि लोगों के मन को जानता है, वह अपने सेवकों को उस समय भी बचाता है जब वे मूर्खता से कार्य करते हैं।

समझने में अस्पष्ट वाक्य, **फिर भी आग के द्वारा**, इस बात से महत्वहीन नहीं हो जाता कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा कुछ लोग बचा लिए जाएँगे, फिर चाहे उन्होंने परमेश्वर की कलीसिया के निर्माण में थोड़ा योगदान दिया हो या उनका योगदान शुन्य रहा हो। प्रेरित, अनुग्रह को प्रमाणित करता है कि दया के काम करके अनुग्रह कमाने के द्वारा इस पर अधिकार नहीं जताया जा सकता। ठीक इसी समय उसने उन लोगों को भी याद दिलाया जो कि निर्माण करने की इच्छा

रखते हैं, अर्थात, जो लोग परमेश्वर के लोगों को सिखाते हैं, वे सचेत रहें जिससे कि हानि न उठाएँ। वह नहीं चाहता कि उनके प्रयास लाभरहित हों। कुछ लोगों ने पौलुस के शब्दों के साक्ष्य में आने वाले संसार में एक बीच का स्थान देखा है, यह स्थान उन लोगों के लिए है जो कि न तो स्वर्ग में जाएँगे और न ही नरक में जाएँगे। प्रेरिताई युग के बाद कुछ शताब्दियों के अन्तर्गत ही पापशोधन के स्थान का मत भी उन्नत रुप में देखा जाने लगा। "वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते," पौलुस के इन शब्दों ने कुछ लोगों को पापशोधन स्थान के विषय में सुझाया। "परन्तु" शब्द प्रेरित के कथन के आलंकारिक स्वभाव की ओर संकेत करता है। यह अक्षरशः पापशोधन आग के अर्थ के साथ नहीं लिखा गया है।

"तुम परमेश्वर का मन्दिर हो" (3:16, 17)

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? 17यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

आयत 16. परमेश्वर का मन्दिर जिसमें **परमेश्वर का आत्मा** वास करता है वह कोई एक ही अकेला विश्वासी व्यक्ति नहीं है और कम-से-कम इस आयत में तो ऐसा कुछ नहीं है। कलीसिया, जो कि विश्वासियों का समुदाय है वह "परमेश्वर का मन्दिर" है। वर्तमान उपमा में कलीसिया के सदस्य एक ऐसी इमारत का निर्माण करते हैं जिसमें आत्मा वास करता है। पौलुस ने कहा कि आत्मा **तुम में वास करता है**, बहुवचन (ἐν ὑμῖν, *एन ह्युमिन)*। बहुवचन सर्वनाम 16 और 17 दोनों ही आयतों में दिखाई देता है। परमेश्वर के लोगों में आवश्यक एकता के लिए प्रेरित अपना तर्क जारी रखता है जो कि 1:10 में आरम्भ हुआ। यह जानते हुए कि परमेश्वर अपने मन्दिर में वास करता है, यह ऐसा मन्दिर है जो कि सब विश्वासियों से मिल कर बना है। अतः मसीही लोग आपस में बँधे हुए हैं क्योंकि वे परमेश्वर के साथ बँधे हुए हैं। कैफ़ा, पौलुस और अपुल्लोस के साथ निष्ठा का दावा करते हुए दल में विभाजन होने का अर्थ है प्रभु का अनादर करना। बाद में पत्री में जब यह विषय एक विश्वासी व्यक्ति के नैतिक व्यवहार के विषय परिवर्तित हो जाता है (6:19), तब एक मसीही व्यक्ति को मन्दिर कहा गया है। आत्मा, विश्वासी व्यक्ति में वास करता है परन्तु यहाँ पर विषय यह नहीं है।

रिचर्ड बी. हेज़ ने पौलुस के उपदेश के सही अर्थ को पकड़ा:

> पुनरुत्थान और परौसिया [दूसरा आगमन] के मध्य समय में संसार में परमेश्वर क्या कर रहा था? पौलुस के अनुसार, आत्मा के द्वारा, परमेश्वर कार्य कर रहा है जिससे कि ऐसे समुदायों की रचना की जा सके जो कि संसार के साथ मेल मिलाप और उसकी चँगाई की पूर्व-कल्पना के साथ हों और उसे

साकार करें। परमेश्वर के प्रेम का फल ऐसे समुदायों का गठन है जो कि परमेश्वर को मानें, आराधना करें और साथ मिलकर प्रार्थना करें ताकि उसकी महिमा हो (उदाहरण के लिए देखें, रोमियो 15:7-13)।[8]

आयत 17. एक सौम्य चेतावनी का प्रस्ताव रखते हुए प्रेरित ने अपने तर्क को संक्षिप्त किया: परमेश्वर अपने मन्दिर को नष्ट होता देखकर उसे हल्का नहीं लेता। तुच्छ ईमानदारी के लिए कलीसिया को विभाजित करने का अर्थ है उसे नष्ट करना। जो व्यक्ति उस मन्दिर को नष्ट करता है उसे यह जानना चाहिए कि **परमेश्वर उसे नष्ट करेगा**। परमेश्वर के निवास स्थान की पवित्रता को दूषित करने वाले के लिए प्रेरित ने किसी प्रकार की सान्त्वना का प्रस्ताव नहीं रखा। उसने किसी प्रकार की कोई आशा नहीं रखी कि इस प्रकार का व्यक्ति हल्का दण्ड पाएगा अथवा शायद मरते-मरते रह जाए। परमेश्वर की कलीसिया पवित्रता का एक स्थान है। आगे के वर्षों में पतरस ने पौलुस की उपमा को विस्तृत किया। उसने कहा कि मसीही लोग "जीवते पत्थर" हैं। वे, "आत्मिक घर बनते जाते हैं जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, आत्मिक बलिदान चढ़ाएँ" (1 पतरस 2:5)।

पौलुस चाहता था कि उसके पाठक जानें कि **परमेश्वर के मन्दिर** के रुप में वे **पवित्र** हैं। "मन्दिर" के लिए प्रेरित सम्भावित रुप से ऐसे शब्द का चुनाव कर सकता था जो कि सम्पूर्ण रुप में ऐसा मिश्रण हो जिसमें प्रांगण, बरामदा और एक बंद पवित्र क्षेत्र में भण्डार की इमारतें (ἱερόν, *हीरन)* हों। इसके स्थान पर उसने ऐसा शब्द चुना जो आन्तरिक पवित्र स्थान, पवित्र स्थान और महा पवित्र स्थान के लिए आता है (ναός, *नाओस)*। कुरिन्थ के मसीही लोग पाप से धो दिए गए थे (प्रेरितों 22:16), अनन्त जीवन के लिए छुड़ा लिए गए थे और पवित्र थे। यह एक चौंकाने वाली घोषणा है। एक लापरवाह खोजकर्ता उन्हें इस प्रकार से देखेगा कि वे सिवाय पवित्र होने के सब कुछ हैं। वे फूट डालने वाले लोग थे। वे अपने बीच में उपद्रवी पाप को भी होने देते थे (5:1)। उनमें से कुछ लोग औपचारिक रुप से मूर्तिपूजा से अलग किए हुए लोग थे (8:10)। वे लोग एक-दूसरे के साथ अनुचित व्यवहार करने के लिए सांसारिक अदालतों का प्रयोग करने के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाए थे (6:7)। फिर भी परमेश्वर ने उन्हें पवित्र किया, इस कारण वे पवित्र थे। मेमने के लहू ने परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध को परिवर्तित कर दिया। पौलुस ने उन्हें उपदेश दिया कि वे पवित्र लोगों के समान जीवन जीएँ, जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें पवित्र किया था।

"सब कुछ तुम्हारा है" (3:18-23)

कुरिन्थ के लोगों के साथ पौलुस सब कुछ होते हुए भी सौम्य था। ये लोग जबकि कुरिन्थ के जनसाधारण क्षेत्र में दार्शनिक कहलाए जाने वाले मूल्यों के साथ कूतर्कों के द्वारा अभिमान से भरे हुए थे, इनसे पौलुस ने खुले रुप से बात

की। 3:1, 2 में उसने सारांश में कहा, "मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से। तुम शारीरिक लोग हो जो कि अब भी बालक हैं।" प्रेरित भी व्यक्ति के स्वयं के महत्व की भावना को बढ़ावा नहीं देता परन्तु साथ ही वह नहीं चाहता कि उसके पाठक यह भूल जाएँ कि वे परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए हैं। बचाव के लिए पौलुस के पास कोई सिद्धान्त नहीं थे; परमेश्वर के स्वरुप में ढालने के लिए उसके पास एक समुदाय था। कुछ स्तर तक कुरिन्थ के लोगों का यह समुदाय आत्मा में बढ़ने के लिए आगे आया था और परमेश्वर के प्रति नम्र समर्पण के साथ देखा जा सकता था। यह आवश्यक था कि वे, प्रभु की कलीसिया के सदस्य के रुप में मन और न्याय की एकता में (1:10) और बुद्धि और आशा के साथ दिखाई दें।

[18]कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए। [19]क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है, "वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है,"; [20]और फिर, "प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है कि वे व्यर्थ हैं।" [21]इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है: [22]क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफ़ा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, [23]और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।

आयत 18. मसीह को अपना प्रभु कहने से मसीही लोग धोखे से मुक्त नहीं हो जाते। कोई व्यक्ति इसके विपरीत तर्क-वितर्क कर सकता है कि मसीही लोग असाधारण रुप से आसानी से धोखे का शिकार हो जाते हैं। विश्वास का एक महत्वपूर्ण तत्व भरोसा है। बोले गए सन्देश के रुप में सुसमाचार, विश्लेषण और समझ के लिए बुलाहट देता है। विश्वासी लोग उन लोगों की ओर आसानी से झुक जाते हैं जो कि सुसमाचार को स्पष्ट कर देते हैं या किसी दुष्ट व्यक्ति को पश्चात्ताप तक लाकर यीशु को प्रभु के रुप में स्वीकार करने के लिए सही शब्द का उपयोग करते हैं। कपटी लोग और अवसरवादी लोग कुरिन्थ में फैले हुए थे। रहस्यमय पदों और दिखावटी ज्ञान में लिपटे शब्दों के साथ धोखा देने में वे सफल रहे थे। संपूर्ण कलीसिया इतिहास में इस प्रकार के लोगों ने अन्य लोगों को निरन्तर गलत मार्ग दिखाया।

मध्य द्वितीय शताब्दी में व्यंग्यकार लूसियन ने एक धोखेबाज़ की कहानी सुनाई जिसने "पेरिग्रीनस" नाम पहन रखा था। लूसियन ने वर्णन किया कि किस प्रकार पेरिग्रीनस एक मसीही व्यक्ति बन गया और शीघ्र ही "उनको ऐसा बना दिया कि वे बालकों के समान दिखाई दें।" उसने उनकी पुस्तकों की व्याख्या की और स्वयं पुस्तकें लिखी। जब पेरिग्रीनस को बन्दीगृह में डाल दिया गया तब उसके भाई-बहनों ने "उसे छुड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।" उन्होंने उसे देने के लिए धन का एक बड़ा भाग एकत्रित किया। लूसियन ने मसीही लोगों की अज्ञानता को संक्षिप्त रुप में इस प्रकार बताना चाहा: "अतः अगर कोई कपटी

और धोखबाज़ व्यक्ति अवसरों का लाभ उठाते हुए उनके बीच [अर्थात मसीही लोगों के बीच] आ जाए तो वह भोले लोगों पर स्वयं को थोपने के द्वारा शीघ्रता से उनसे धन प्राप्त कर लेता है।"[9]

लूसियन ने अपने पाठकों का मनोरंजन करने के लिए बढ़ा-चढ़ा कर बात की परन्तु उसका विवरण कुछ विश्वासियों के बहुत निकट है जिससे कि उन्हें सोचने पर मजबूर किया जा सके। अपने लाभ के लिए मसीही लोगों को चाहिए कि वे क्षमाशील और भरोसेमन्द बनें। इस प्रकार के गुणों के लिए पौलुस जब उन लोगों को उत्साहित कर रहा था तब ठीक समय पर बुद्धिमानी के लिए भी इस प्रकार का गम्भीर प्रश्न पूछा जाना चाहिए। प्रेरित ने कुरिन्थ के लोगों से कहा कि चतुर भाषणों से, प्रभावी बोली से और रहस्यमयी ज्ञान विद्या से आकर्षित होने का अर्थ है स्वयं को धोखे की स्थिति पर स्थापित करना। जो मसीही लोग, अपने दिनों में प्रख्यात "आत्मिक रुप से प्रकाशमान" संसार के साथ बने रहने के लिए **इस युग में** स्वयं को ज्ञानी समझते हैं उन्हें चाहिए कि **मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए**।

आयत 19. पौलुस कहता है कि जब लोग ऐसे विषयों की खोज करते हैं जो उनकी पहुँच से परे होते हैं तो इससे परमेश्वर प्रभावित नहीं होता परन्तु इससे उसका मनोरंजन ज़रुर होता है। व्यंग्योक्ति के स्पर्श के साथ प्रेरित **संसार के ज्ञान** से एक प्रकार की पहचान करता है और यह ज्ञान "इस युग में ज्ञानी लोगों" के लिए उपयुक्त है (3:18)। इस प्रकार का ज्ञान अपनी सीमाओं के विषय में अनजान होता है। हव्वा उस समय प्रभावित हुई जब उसे जानकारी मिली कि वह वाटिका के किसी भी फल को खा सकती है और वह मरेगी नहीं (उत्पत्ति 3:1-4)। शिनार देश में एक मैदान पर लोगों ने अपने युग के ज्ञान से सीखा, जब उन्होंने आकाश तक पहुँचने के लिए एक गुम्मट बनाने की योजना के लिए शुरुआत की (उत्पत्ति 11:4)। मानवजाति की कहानी ऐसी है जिसमें परमेश्वर ने भाषा की गड़बड़ी डाली जिससे कि वे एक-दूसरे की बोली को समझ न सकें और उनको वहाँ से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया। अहंकार और अभिमान ने लोगों को भूलने पर मजबूर कर दिया कि उनका स्वयं का ज्ञान **परमेश्वर के निकट मूर्खता है**।

पौलुस ने अय्युब 5:13 का उद्धरण देते हुए अपनी चेतावनी को रेखांकित किया: **"वह** [परमेश्वर] **बुद्धिमानों को उनकी धूर्तता ही में फँसाता है।"** ये शब्द अय्युब के मित्र एलीपज़ के हैं। अय्युब से लिए गए अनेक पद नए नियम में पिरोये गए हैं परन्तु कार्य का सीधा दृष्टान्त मात्र तीन बार ही दिया गया है। तीन में से दो एलीपज़ के भाषण में देखे जा सकते हैं (1 कुरिं. 3:19 [अय्युब 5:13]; इब्रा. 12:5 [अय्युब 5:17]); जब परमेश्वर, अय्युब से बात करता है तब तीसरा भाग देखा जा सकता है (रोम.11:35 [अय्युब 41:11; 35:7 में एलीहू के शब्द देखें])। व्यंग्य की बात यह है कि अय्युब के मित्रों ने यह बात स्वीकार की थी कि मनुष्य, परमेश्वर के मार्गों को नहीं जान सकता फिर भी वे अय्युब को निरन्तर निर्देश देते रहे मानो वे ज्ञान के विषय में सब जानते हों। उस स्तर तक अय्युब के मित्र स्वयं

के छल में फँस गए थे।

आयत 20. अपनी बात पर आगे ज़ोर देते हुए पौलुस भजन संहिता 94:11 की ओर बढ़ता है। यह उद्धरण पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (भजन 93:11; LXX) से लिया गया है, जहाँ पर इसका अर्थ इब्रानी भाषा से कुछ ही भिन्न है। प्रेरित ने इस बात पर ज़ोर दिया कि परमेश्वर, मानवीय प्रयासों का ध्यान रखता है जिससे कि अपने कार्यों का गुण-दोष देख सके। वह जानता है कि जब मनुष्य साहसी बन जाता है और उसके प्रकाशन को एक तरफ़ रख देता है, तब **उनके विचारों ... वे व्यर्थ हैं**। पौलुस ने यह नहीं सुझाया कि शिक्षा और खोज परमेश्वर को भड़काते हैं। इसके स्थान पर उसने यह घोषणा की कि जब लोग अपने विचारों में अंतिम चरण पर पहुँच जाते हैं, जब तकनीकी उन्नति और इलेक्ट्रोनिक प्रतिभा थक जाती है तब अस्तित्व का रहस्य इन शब्दों से अधिक कुछ विवरण नहीं देता "आदि में परमेश्वर ने ... सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)।

आयत 21. पौलुस के द्वारा दिए गए उपदेश न तो सारांश में हैं और न ही कोई काल्पनिक सोच है। ऐसा नहीं था कि प्रभु *कुछ लोगों* को "उनकी चतुराई में फँसा देता है।" वह कुरिन्थ के मसीही लोगों को उनकी चतुराई में फँसाने की प्रक्रिया में था क्योंकि वे लोग **मनुष्यों पर घमण्ड** करने की परीक्षा में पड़ गए थे। पौलुस ने उन्हें याद दिलाया, "क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो" (3:17)। यहाँ प्रेरित ने व्यक्तिगत रुप से उनसे बात की। मसीह तक लाने के लिए परमेश्वर ने जिस ज्ञान से कुरिन्थ के लोगों के लिए काम किया वह ज्ञान वे लोग किसी प्रकार से भी प्राप्त नहीं कर सकते थे। वे लोग परमेश्वर के छुड़ाए हुए, चुने हुए लोग थे। परमेश्वर के वरदानों के अतुलनीय मूल्य की पहचान करने के लिए उन्हें दृष्टिकोण और नम्रता की आवश्यकता थी। पौलुस ने कहा कि मसीही लोग यह महसूस करते हैं कि **सब-कुछ उनका है** क्योंकि वे परमेश्वर का मन्दिर हैं।

आयत 22. पौलुस अथवा अपुल्लोस अथवा कैफ़ा ने जब कुरिन्थ के मसीही लोगों में सेवकाई की तो इससे वे लोग आशिषित हुए। एक अर्थ में सेवक उन लोगों के हैं जिनके बीच वे सेवकाई करते हैं। तर्कवादी, कपटी शिक्षा "शारीरिक मनुष्य" (3:1) के सम्मुख अभिमान के उच्च स्तर का प्रस्ताव रखती है, परन्तु जो लोग मसीह के आत्मा से भरे हुए होते हैं उनके लिए सेवक के समान सेवकाई अधिक मूल्य रखती है। 1:12 और 3:22 में इन तीन लोगों के लिए दिए गए सन्दर्भ, इस पत्री के प्रथन तीन अध्यायों में पौलुस के अनेक उपदेशों के लिए कोष्ठक के रुप में सेवा करते हैं। कुरिन्थ के लोगों ने अपने शिक्षकों से दिशा-निर्देश प्राप्त किए थे इसलिए उनके पास **सब-कुछ** था। जो कुछ वे जानते थे कि वे कौन थे और किनके थे, ये सारे सम्बन्ध उन सब लोगों से उत्पन्न हुए जिन्होंने उन्हें सिखाया था। **क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य**, सब कुछ तुम्हारा है।

1:12 के समान 3:22 में कैफ़ा का वर्णन एक पहेली है। क्या पतरस ने स्वयं कुरिन्थ में समय बिताया था? सम्भव है, परन्तु जब पौलुस ने कुरिन्थ में

सुसमाचार रोपने का वर्णन किया तब वह अपुल्लोस था जिसने उसे सींचा न कि पतरस ने। कुरिन्थ के मसीही लोग स्पष्ट रुप से अपुल्लोस को व्यक्तिगत रुप से जानते थे (प्रेरितों 18:24, 27; 1 कुरिं. 16:12), फिर भी यह इतना स्पष्ट नहीं है कि वे कैफ़ा को भी व्यक्तिगत रुप से जानते थे। फिर भी यह बताना कठिन है कि जब तक कलीसिया में विभाजन करने वाले दलों में पतरस का नाम उछाला नहीं गया तब भी पौलुस ने पतरस का वर्णन क्यों किया। पतरस का नाम लेने के लिए स्वयं प्रेरित के ज्ञान अथवा सहमति की आवश्यकता नहीं रही होगी।

कुरिन्थ के पत्रों में घटना के अनुसार टिप्पणी इस निष्कर्ष का समर्थन करती है कि यहूदी विश्वासी, पौलुस की अनुपस्थिति में यरुशलेम से आए, जैसा कि वे आरम्भिक समय में अन्ताकिया गए थे (प्रेरितों 15:1)। उन्होंने यह माँग की कि अन्यजाति विश्वासी मूसा की व्यवस्था की रीति को पकड़े हुए हैं। जैसा कि अन्ताकिया के शिक्षकों ने याकूब से अधिकार का दावा किया (गला. 2:12), उसी प्रकार के शिक्षक पतरस से अधिकार मिलने का दावा करते दिखाई देते हैं। वे लोग व्यवस्था के प्रति धुन से भरे थे, जैसा कि यरुशलेम में फ़रीसी दल से सम्बन्ध रखने वाले विश्वासी थे (प्रेरितों 15:5; देखें 21:20)। यहूदिया से आए हुए शिक्षक सम्भावित रुप से उसी समान कुरिन्थ में गड़बड़ी उत्पन्न कर देते जैसा कि उन्होंने कैफ़ा से अधिकार मिलने का दावा करते हुए गलातिया की कलीसियाओं में घुसपैठ की थी। वास्तव में कैफ़ा कभी भी ऐसे लोगों के साथ नहीं होता। कुछ कारणों से पौलुस ने अपने पहले पत्र में यहूदी मसीही शिक्षकों का सीधा सामना नहीं किया; फिर भी, जब उसने 2 कुरिन्थियों लिखा तब उसने इस विषय पर लिखा (2 कुरिं. 3:13, 14)। इस प्रकार के शिक्षक स्पष्ट रुप से झूठे प्रेरित थे जिनके साथ पौलुस को संघर्ष करना था।

आयत 23. कुरिन्थ के विश्वासियों में तब तक एकता प्रबल नहीं हुई जब तक कि उन्होंने स्वयं को, अपने ज्ञान को और यहाँ तक कि अपने प्रेरिताई शिक्षकों को प्रभु के प्रति समर्पित नहीं किया जिसने उन्हें बचाया था। पौलुस चाहता था कि कलीसिया उसके शब्दों को व्यक्तिगत रुप से ले जब वह लिखता है, "सब कुछ तुम्हारा है" (3:22)। इस साधारण तथ्य: **तुम मसीह के हो** की तुलना में पौलुस अथवा अन्य किसी शिक्षक के प्रति किसी प्रकार की निष्ठा महत्व नहीं रखती। वे एक समूह थे क्योंकि वे मसीह के हैं। मसीह के लोग होने का अर्थ है परमेश्वर के लोग होना क्योंकि **मसीह, परमेश्वर का है**। पिता और पुत्र की एकता ने कुरिन्थ के मसीहियों से यह अपेक्षा की, कि वे आन्तरिक झगड़ों को स्वयं से परे रखें और स्वर्गीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली एकता को गले लगाएँ।

अनुप्रयोग

शरीर में जीने का अर्थ (3:1-3)

पौलुस ने यह स्वीकार किया कि उसके लिए यह आवश्यक था कि वह कुरिन्थ के मसीहियों को "शारीरिक मनुष्य" के रुप में सम्बोधित करे। उसने यह

साक्ष्य दिया कि उनके व्यवहार ने ये संकेत दिए कि वे अब भी "शारीरिक" हैं। वे आपस में निचले स्तर की जलन को स्वीकृति दे रहे थे जिससे कि उनमें आपस में बैर उत्पन्न हो जाए। आपसी विरोध, भाईचारे के प्रेम को दबा रहा था; बालक जैसा अपरिपक्व व्यवहार उनकी शान्ति को भंग कर रहा था।

मसीही लोग, शरीर के अनुसार, चोरी, नशा, नशीले पदार्थ का प्रयोग, व्यभिचार और झूठ बोलने जैसे पाप के साथ जीवन निर्वाह करने की ओर प्रवृत्त हो गए। इस प्रकार का व्यवहार निश्चित रुप से मनुष्य को नीचे ले आता है परन्तु "शारीरिक मनुष्य," जिनको पौलुस सम्बोधित कर रहा है, अनेक ऐसे पाप करता है जो कि उसकी समझ में कुछ भी नहीं हैं। स्वार्थवश विरोध, निर्दयी टिप्पणियाँ और छिछोरी गपशप जैसे "छोटे" पाप स्वयं के व्यवहार का विनाश करने के स्थान पर शरीर की एकता को हानि पहुँचा सकते हैं। पौलुस ने मसीहियों से आग्रह किया कि वे प्रभु के सम्मुख ग्रहणयोग्य चाल चलें "अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो" (इफ़ि. 4:2)। कुलुस्सियों की कलीसिया को उसने इस प्रकार लिखा, "पर अब तुम भी इन सब को, अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुँह से गालियाँ बकना ये सब बातें छोड़ दो" (कुलु. 3:8)।

कलीसिया और इसकी अगुवाई (3:4-9)

विभिन्न अध्ययन ये संकेत देते हैं कि जो लोग कलीसिया भवन में बैठते हैं और अनेक वर्षों तक प्रचारक से सुनते रहते हैं वे प्रायः प्रचारकों के जाने बिना ही उनकी पहचाने पाने के लिए ऐसा करते हैं। प्रचारक एकमात्र अस्तित्व नहीं है जिसके साथ लोग पहचान पाने की ओर झुकाव रखते हैं। अगुवाई और ईमानदारी अनेक दिशाओं से आती हैं। प्रायः लोग, स्थानीय खेल दल के प्रति, शहरों अथवा राज्यों के प्रति जहाँ पर वे रहते हैं और स्वयं द्वारा चुने हुए राजकीय प्रतिनिधियों के प्रति ईमानदारी रखते हैं। अतः कलीसिया में जो लोग परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं उनके विषय में अगर मसीही लोग ऊँचे विचार रखते हैं तो यह आश्चर्य की बात नहीं है।

फिर भी, व्यक्तिगत सराहना, प्रशंसा अथवा ईमानदारी, उस समय एक समस्या बन जाती है जब बहुत अधिक हो जाती है। एक सन्दर्भ में, पतरस (प्रेरितों 10:25, 26), और एक अन्य सन्दर्भ में पौलुस और बरनाबस (प्रेरितों 14:14, 15) उस समय भयभीत हो गए जब उनको सुननेवालों ने उनका बहुत आदर सम्मान किया। कुरिन्थ में मसीहियों ने व्यक्तिगत सराहना और ईमानदारी के आधार पर अपने लिए दलों का गठन करने के लिए शिक्षकों को बहुत ऊँचा उठाया। इस प्रकार के दलों को, न तो पौलुस ने और न ही अपुल्लोस ने प्रेरित किया कि वे ऐसा करें। जो लोग पौलुस को पसन्द करते थे उन्होंने उसको प्राथमिक स्थान में रखा; उसने शहर में मसीह के विषय में पहली बार प्रचार किया था। दोष लगाकर कलंकित करने वाले लोगों ने ये दावा किया कि वह बोलने समय हकलाता था (2 कुरि. 11:6) और व्यक्तित्व में भी वह दुर्बल दिखाई

देता था (2 कुरि. 10:10)। अपुल्लोस, दूसरी तरफ़ विद्वान पुरुष था और बोलने में निपुण था (प्रेरितों 18:24)।

प्रचारकों में एक की तुलना में अन्य प्रचारक को व्यक्तिगत रुप से पसन्द करने के आधार पर कभी-कभी कलीसियाओं में विघटन की ताकतें विकसित हो जाती हैं। एक स्तर पर अलग-अलग पसन्द में भिन्नता को समझा जा सकता है। व्यक्तिगत रुप से मसीही लोग विभिन्न तरीकों से सीखते हैं और फिर स्वाभाविक रुप से सिखाने की विभिन्न शैलियों से लाभान्वित होते हैं। परिणामस्वरुप, इससे तब तक कोई हानि नहीं होती जब तक कि कलीसिया में किसी प्रकार का उपद्रव उत्पन्न न हो जाए। कुरिन्थियों के नाम पौलुस के पत्र में, पौलुस हमें याद दिलाना चाहता है कि मसीही विश्वास के केन्द्र स्थान में मसीह है। उसके प्रति विश्वासयोग्यता, अन्य सब चीज़ों से बढ़कर है। साथ ही देह में एकता के लिए व्यक्तिगत रुप से किसी को अधिक आदर देने की प्रवृति को परे कर देने की आवश्यकता है।

कलीसिया, परमेश्वर का मन्दिर है (3:10-23)

समाजविज्ञानी कहते हैं कि आधुनिक दिवस का पाश्चात्य संसार स्वयं के व्यक्तिवाद में बहुत बढ़ता चला जा रहा है। समुदाय के प्रति ज़िम्मेदारियों की व्यक्तिगत अनदेखी गति पकड़ रही है। नागरिक समूह इसके लिए सदस्यों को इसमें बनाए रखने में समस्या को देख रहे हैं और राजकीय शासन में जनसाधारण सेवाएँ लोकप्रियता के साथ नीचे जा रही हैं। लोग अधिक-से-अधिक समय फ़ोन, कम्प्युटर और अन्य इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के स्क्रीन को देखने में बिता रहे हैं। व्यंग्यात्मक रुप से, जबकि “सामाजिक मीडिया” का विस्तृत प्रयोग एक तरीके से लोगों को एक-साथ ला रहा है, दूसरी तरफ़ यह लोगों को एक-दूसरे से अलग कर रहा है और मानवीय परस्पर व्यवहार को कम कर रहा है।

यीशु मसीह की कलीसिया लोगों के एक समुदाय से बढ़कर है जो विश्वास का एक सामान्य अंगीकार और जीवन के लिए दिए गए मार्ग के प्रति एक समर्पण रखता है। कलीसिया जो कुछ भी है उसके अतिरिक्त यह एक सामाजिक तन्त्र है। अपने अस्तित्व के लिए जिस प्रकार अन्य संस्थान समाज के साथ जुड़ाव पर निर्भर रहते हैं, कलीसिया उस समय पीड़ित होती है जब व्यक्तिवाद के कारण, कलीसिया में विघटन उत्पन्न हो जाता है। उस समय की आत्मा के साथ मेल होना एक स्तर तक ही सम्भव हो पाता है। उदाहरण के लिए, सुसमाचार प्रचार प्रायः एक व्यक्तिगत निवेदन के साथ आरम्भ होता है: “क्या आप बचाए जाना चाहते हैं?” कुछ सुसमाचार के प्रचारक ऐसा प्रश्न करते हैं। “आप सबको पापियों की प्रार्थना करना है और यीशु को अपने हृदय में आने की स्वीकृति देना है।” इस प्रकार का निवेदन पतरस को, पौलुस को और नए नियम के अन्य लेखकों को असाधारण लगा। पौलुस ने बाज़ारों में और गलियों में लोगों को सिखाया। उसने पश्चात्ताप करने के लिए और बपतिस्मा लेने के लिए लोगों को चुनौती दी (देखें गला. 3:27)। जो लोग उसकी बातों को सुनते थे उन्हें वह बताता था कि

परमेश्वर के पुत्र मसीह में विश्वास करने से और उस में बपतिस्मा लेने से बचाए गए लोगों को प्रभु, अपनी देह में शामिल कर लेगा। मसीह के साथ जीवन का अर्थ है समुदाय में जीवन पाना; इसका अर्थ है कलीसिया में जीवन प्राप्त करना।

बचाया जाना एक गुप्त, व्यक्तिगत कार्य से भी बढ़कर है जिसके द्वारा यीशु हृदय में आमन्त्रित किया जाता है। सुसमाचार की आज्ञा का पालन करने के साथ ही वे बचाए हुए लोगों का भाग बन जाते हैं कि वे अपनी बातें कलीसिया के लोगों के साथ बाँट सकें, उनसे उत्साह पाएँ, और उनके द्वारा सुधार पाएँ। कलीसिया में लोगों के एक सामाजिक तन्त्र से प्रत्येक सदस्य कुछ शिक्षा अन्य लोगों को देता है और स्वयं भी उनसे शिक्षा प्राप्त करता है।

कुरिन्थ की कलीसिया इस स्तर तक पीड़ा में थी कि शहर में मसीही लोग यह भूल गए कि वे एक-दूसरे के सदस्य हैं। सामूहिक रुप से वे परमेश्वर के लोग थे, परमेश्वर का मन्दिर थे। परमेश्वर अपने मन्दिर में निवास करता है। प्रेरित यह सिखाने में भी निडर था कि सम्भव है कि लोग मसीह के बिना ही जी रहे हों। सम्भव है कि एक व्यक्ति बिना मसीह के ही जी रहा हो, जब तक कि वह व्यक्ति, मसीह के द्वारा उसकी देह में जोड़ न दिया जाए। कलीसिया की संख्या का बढ़ जाना अथवा घट जाना उन लोगों के समर्पण पर निर्भर करता है जो कि अन्य लोगों के साथ अपना विश्वास बाँटते हैं।

जब मैं महाविद्यालय में था तब विज्ञान विषय को मैं बहुत पसन्द करता था। मैंने, प्रस्तावित गणित, रसायन शास्त्र और भौतिक विज्ञान जैसे प्रत्येक उच्च पाठ्यक्रम प्राप्त किए। मेरी रसायन शास्त्र की कक्षा में एक अतिथि व्याख्याता ने एक दिन एक प्रदर्शन दिखाया जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। उसने काँच का एक जग या सुराही ली। वह सामान्य दिखाई दे रहा था। उन्होंने बताया कि उस काँच को विशेष तकनीक से कठोर बना दिया गया था। इसका प्रदर्शन करने के लिए उन्होंने उसका प्रयोग हथौड़े के रुप में किया। उन्होंने अपना हाथ उठाते हुए एक लम्बी कील को दो बोर्ड में से ठोक दिया कि वे जुड़ जाएं। इसके बाद उन्होंने उस जग को उठाया, एक छोटा धातु का टुकड़ा लिया और उसे इस काँच के गिलास में गिरा दिया। वह धातु का टुकड़ा हज़ारों टुकड़ों में बिखर गया। उन्होंने एक झाड़ू ली और उन टुकड़ों को साफ़ कर दिया। हमने यह सीखा कि फुलाए हुए काँच के वे जग जो कि परम्परागत रुप से ठण्डे नहीं किए गए हों वे बाहर से बहुत ही कठोर हो सकते हैं फिर भी अन्दर से वे बहुत ही नाज़ुक होते हैं।

यह प्रदर्शन अनेक बार मेरे मन में आया। मैंने अनेक ऐसी कलीसियाएँ देखी हैं जो कि सच्चाई सिखाने में दृढ़ थी और बाहरी दबावों का सामना करने के लिए भी योग्य दिखाई देती थी परन्तु अन्दर से ही दो भाग की हुई थी। एक कलीसिया जब बाहरी ताकतों का सामना करती है तब हो सकता है कि हथौड़े के समान मज़बूत हो परन्तु आन्तरिक आक्रमणों के प्रति कमज़ोर हो। कुरिन्थ की कलीसिया पौलुस की आँखों के सामने ही दो भाग हो रही थी - मसीह के सिद्धान्तों को छोड़ देने के कारण ऐसा नहीं था परन्तु अन्दर से, स्वार्थ, घमण्ड और जलन के “भाग” उनकी संगति को हानि पहुँचा रहे थे।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. ए. मोट्यर, "फ़्लेश," इन *इवेन्जलिकल डिक्शनरी ऑफ़ थियोलॉजी*, दूसरा संस्करण, ऐड. वॉल्टर ए. एल्वेल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर अकेड्मिक, 2001), 455. [2]मध्य उन्नीसवीं शताब्दी में, एफ़. सी. बौर से जर्मनी में, विचार का एक प्रभावी विद्यालय उत्पन्न हुआ जिसने अपना आरम्भ बिंदू इस दावे पर पाया जिसकी गवाही 1 कुरिन्थियों ने, चारों ओर आरम्भिक कलीसिया में समस्या उत्पन्न करने वाले उपद्रवी दलों के विषय में दी। सिद्धान्त के अनुसार, पतरस ने मसीहत के विषय में एक संकीर्ण यहूदी समझ के बारे में बताया जबकि पौलुस उस सुसमाचार के लिए लड़ा जो कि अपने कार्यक्षेत्र में विश्वव्यापी है। बौर ने इस बात पर बल दिया कि इन प्रेरितों के बीच अन्तर को शान्त करने के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखी गई। यह सिद्धान्त, अपने विस्तृत रुप में, प्रभावी होने के लिए निरन्तर आगे बढ़ता है। डब्ल्यु. वार्ड गेस्क में, *अ हिस्ट्री ऑफ़ इन्टरप्रिटेशन ऑफ़ द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्ल्स* (पीबॉडी, मास.: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 1989), 27-30 पर बातचीत की गई है। [3]1 यूहन्ना 1:1 से तुलना करें जहाँ पर मसीह के सम्बन्ध में नपुंसक लिंग सम्बन्धी सर्वनाम आता है: "उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था।" पढ़ने वाले व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इस प्रकार पढ़े, "वह जो आदि से था।" [4]गोर्डन डी. फ़ी, *द फ़र्स्ट ऐपिस्ल टू द कोरिन्थियन्स*, द न्यु इन्टरनेश्नल कमेन्ट्री ओन द न्यु टेस्टामेन्ट (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1987), 128. [5]नासरत के लोगों ने कहा कि यीशु एक τέκτων (*टेकटोन*, "एक बढ़ई"; मत्ती 13:55) था। इस शब्द का अनुवाद सामान्यता "खाती" के रुप में किया जाता है। सम्भव है कि यीशु एक बढ़ई हो परन्तु यह शब्द जाति को बताता है। इस प्रकार के शब्द पत्थर के कारीगर के लिए भी प्रयोग में लिए जाते होंगे। [6]जोसफ़ जेकब्स, कौल., *परी की अंग्रेज़ी की कहानियों* में "द थ्री लिट्ल पिग्स" (लंडन: डेविड नट्ट, 1890), 68-72. [7]जेम्स डी. जी. डन्न, *द थियोलॉजी ऑफ़ पौल द अपोस्ल* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1998), 491. [8]रिचर्ड बी. हेज़, *द मोरल विज़न ऑफ़ द न्यु टेस्टामेन्ट: कम्युनिटी, क्रोस, न्यु क्रीएशन* (सेन फ़्रान्सिसको: हार्पर-सेनफ़्रान्सिसको, 1996), 32. [9]लूसियन *पासिंग ऑफ़ पेरिग्रीनस* 11-13.